कैरेक्टर 1 - श्यामाप्रसाद (काका जी)

कैरेक्टर 2 - आँख के डॉक्टर दिनेश जी

(काका जी अपने आँखों के चश्मे बनवाने डॉक्टर दिनेश के क्लिनिक पर आते हैं।)

डॉक्टर दिनेश - नमस्ते काका जी, कैसे आना हुआ ?

काका जी - बेटा ज़रा चश्मा बना दो, दिखाई कम दे रहा है।

डॉटर दिनेश - ठीक है, काका। ज़रा चेक कर लूँ कितना नंबर का चश्मा लगेगा।

(डॉक्टर साहब ब्लैकबोर्ड पर क शब्द लिखते हैं और काका को एक चश्मा पहनाकर उनकी तरफ मुखातिब होते हुए बोलते हैं)

डॉक्टर साहब- काका जी, बताओ यह क्या लिखा है ?

(काका पशोपेश में पड़ जाते हैं। काका ठहरे अनपढ़। अब डॉक्टर साहब को बताने में शर्मा रहे थे कि वह पढ़े - लिखे नहीं हैं। उन्हें इसका पछतावा हो रहा था कि अगर वे पढ़ लिए रहते तो आज दिक्कत नहीं होती। अब उन्होंने दिमाग लगाया।)

काका जी - बेटा कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।

डॉक्टर साहब अलग नंबर का चश्मा देते हैं और पूछते हैं - काका जी, बताओ क्या लिखा है ?

काका - बेटा कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।

(जब काका जी कई बार ऐसा करते हैं तो डॉटर साहब को शक हो जाता है और वे काका जी से पूछते है)

डॉक्टर साहब - काका जी, बुरा न मानो तो एक बात पूछूं ?

काका - जी पूछिए।

डॉक्टर साहब - आप कितना पढ़े हैं ?

काका - काका हड़बड़ा जाते हैं, लेकिन अब उनके भी सब्र का बांध टूट चुका था। उन्होंने कहा बेटा मैं कुछ पढ़ा नहीं हूँ, लेकिन यह बात बताने में मुझे शर्म आ रही थी।

डॉक्टर साहब - मैं आपकी बात समझ सकता हूँ। पढ़ाई का महत्व तब समझ में आता है जब उसकी जरुरत पड़ती है। वैसे जब माँ - बाप या अन्य कोई भी पढ़ने के लिए कहता है तो उस समय यह बात समझ में नहीं आती, लेकिन कोई बात नहीं, पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती है, मैं आपको चश्मा देता हूँ और कल से आप 1 घंटे मेरे पास पढ़ने आया करो, मैं आपको सब सीखा दूंगा।